गुरु

के प्रति निष्ठा

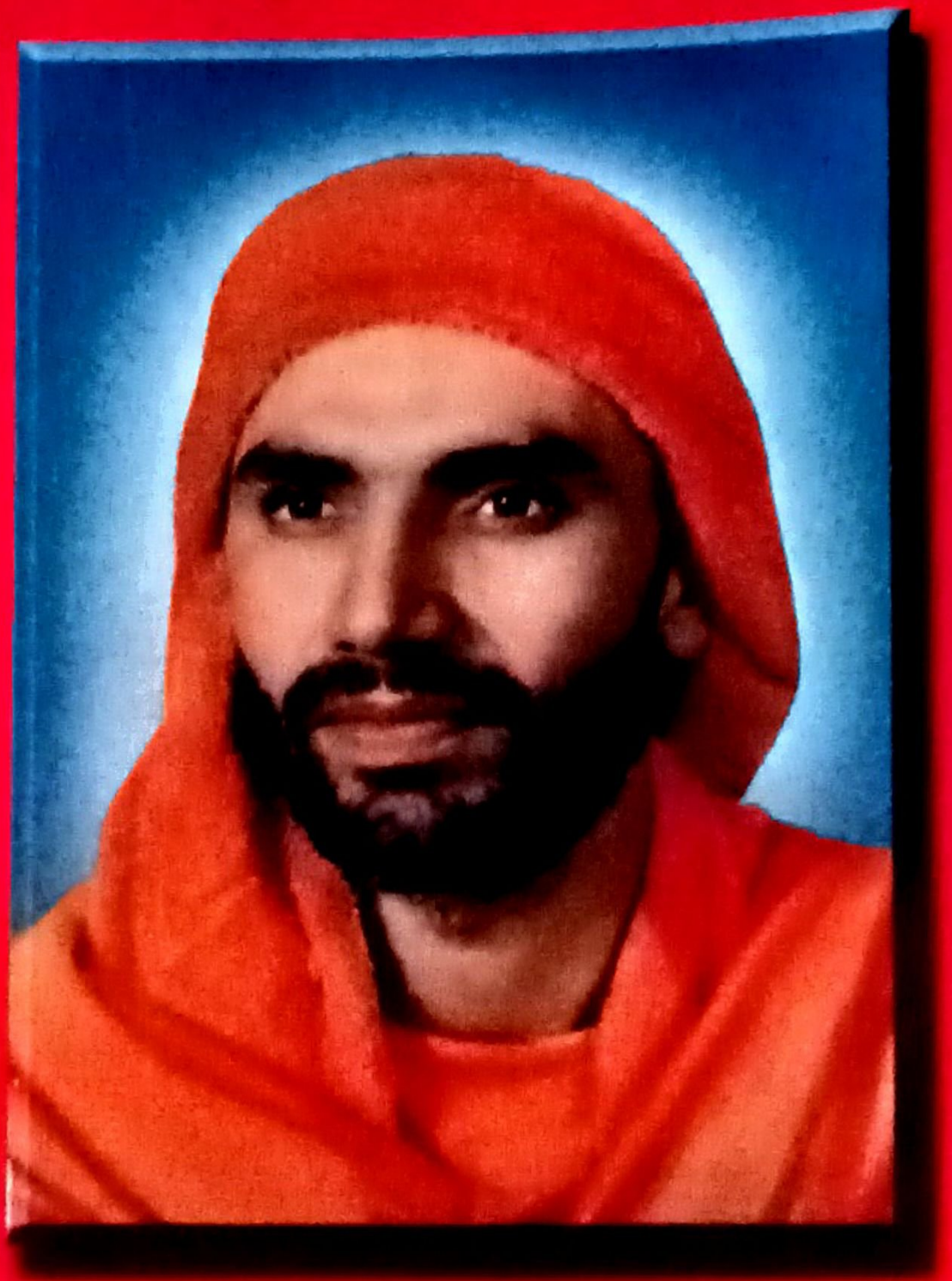

स्वामी रामानन्द
साधना धाम

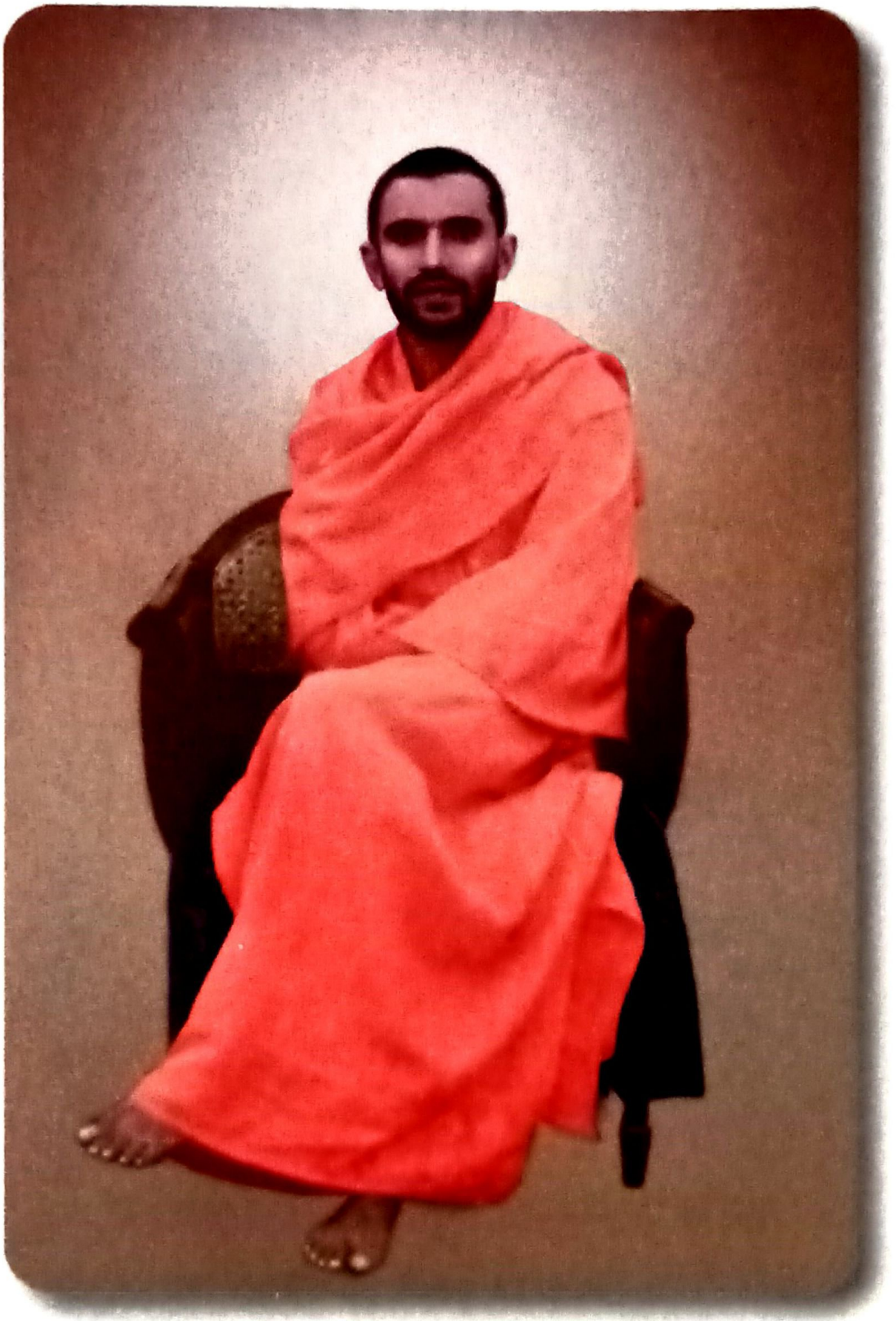

स्वामी रामानन्द जी

गुरू के प्रति निष्ठा

तेजेन्द्र प्रताप सिंह

स्वामी रामानन्द साधना धाम
संन्यास रोड, कनखल
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

प्रथम संस्करण - 2010
द्वितीय संस्करण - 2012

2000 प्रतियाँ

मूल्य: सप्रेम भेंट

प्रकाशक
साधना परिवार
स्वामी रामानन्द साधना धाम

॥श्री राम॥

"यदि इस घटना को पढ़ने से किसी एक साधक की भी अपने गुरू के प्रति निष्ठा प्रबल होती है और उसके साधन में प्रगति आती है, तो मैं समझूँगा कि मेरा यह प्रयास सफल रहा है।"

तेजेन्द्र प्रताप सिंह

॥ श्री राम॥

आध्यात्मिक अनुभूतियों के कहने पर रोक है, भय इस बात का रहता है कि उस व्यक्ति को अपनी स्थिति पर अभिमान न हो जाय। ईश्वर सब कुछ सहन कर लेते हैं लेकिन अभिमान के लिए तत्काल उचित दण्ड की व्यवस्था हो जाती है। महर्षि नारद जैसे महात्मा को भी विश्वमोहिनी द्वारा उचित दण्ड मिला। दूसरी तरफ जो लोग अनुभूतियों को सुनते हैं विचार करने लगते हैं कि इतने वर्षों तक साधनारत होते हुये भी उन लोगों को ऐसी अनुभूतियाँ क्यों नहीं होती हैं। इस प्रकार से वे भी कुछ भ्रम में आ जाते हैं।

सच तो ये है कि हम सब लोग एक ही सीढ़ी पर हैं, लेकिन विभिन्न स्तरों एवं सोपानों पर। अतः आवश्यकता के अनुसार सबको अलग-अलग अनुभूतियाँ होती हैं और ऐसे भी साधक हैं जिन्हें किसी अनुभूति की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। मैंने अपने गुरू महाराज से पूछा था कि एक समय आप भी साधक रहे होंगे तो कृपा करके बतायें कि आपको कौन-कौन सी अनुभूतियाँ हुईं। वे उस समय किसी को पत्र लिख रहे थे, तत्काल कलम रखकर बड़े ध्यान से मेरी तरफ देखने लगे। उत्तर था तुम हमारा हिसाब लोगे और जो कुछ हम कहेंगे उस पर विश्वास करोगे? सच तो यह है कि मेरे लिए किसी अनुभूति की आवश्यकता नहीं समझी गयी और मैं अपनी मंजिल तक पहुँच गया। अतः अनुभूतियों के आधार पर किसी साधक की आध्यात्मिक स्थिति का आकलन करना ग़लत होगा।

सन् 2002 में जब मैं अपने आश्रम गया तो पहली बार कुछ भाई-बहनों ने कहा कि नये साधकों के लिये स्वामी जी के बारे में कुछ बताईये। मेरा उत्तर था कि अनुभूतियों के कहने पर रोक है। कहने वाले

के लिये अच्छा नहीं समझा जाता है। अतः विवश हूँ। वर्ष 2003 अथवा 2004 में पुनः कैम्प जाने पर वही आग्रह पुनः दोहराया गया। बहुत विचार करने पर अन्दर से ऐसी आवाज आने लगी कि गुरू महाराज वाली घटना को क्यों नहीं कह देते। उसको कहने के लिये तुम्हें क्या आपत्ति है। इस प्रकार से एक घटना जो मेरे जीवन में घटी थी, कहनी पड़ी। तभी से लोग कहते रहे कि कम से कम इसे तो लिपिबद्ध कर दो। इसी अनुरोध के नाते यह लिख रहा हूँ।

बहुत कम उम्र से ही मेरे अन्दर यह तीव्र इच्छा होती थी कि यदि शरीर कुछ भी नहीं है और जो कुछ है वह आत्मा है तो फिर उस आत्मा का स्वरूप क्या है? मैंने इसके लिये बहुत पहुँचे हुये लोगों से पूछा। उत्तर मिलता था कि यह प्रश्न बहुत जटिल है। शरीर छोड़ते समय प्रायः सभी अपनी-अपनी आत्मा को देखते हैं। लेकिन लौट करके आता कौन है, जो यह बताये कि आत्मा का स्वरूप क्या है? किसी ने यह अवश्य कहा कि उस आत्मा का स्वरूप मोमबत्ती की लौ (Candle Flame) की तरह होता है और उसका निवास कलेजे में होता है। दोनों पसलियों के बीच में जो गडढ़ा होता है वही उसका निवास स्थान है। जितने बड़े महात्मा हुए हैं, और जिनका चित्र भी आप लोगों ने देखा होगा, उसी स्थान पर ध्यान करते चित्र में दिखाये जाते हैं। मुझे यह भी उत्तर सन्तोषप्रद नहीं लगा। आत्मा यदि परमात्मा का अंश है तो उसका स्वरूप कैसे मोमबत्ती की लौ की तरह होगा, जानने की इच्छा थी। सोचा था कि जब गुरू बनायेंगे तो इसका उत्तर प्राप्त करेंगे। परन्तु दुर्भाग्यवश गुरू बनाते ही स्वामी जी चिर समाधि में चले गए और यह प्रश्न अनुत्तरित ही रह गया।

एब बार पाण्डुचेरी की माँ की आत्म कथा पढ़ रहा था, उसमें एक घटना का उल्लेख है कि एक दिन वे टहलने निकलीं तो दूर एक जंगल तक चली गयीं। थक जाने के कारण एक शाह बलूत (Oak Tree) के नीचे थोड़ा विश्राम करने के लिए बैठ गईं। तो सहसा क्या देखती हैं कि पेड़ की आत्मा सामने आकर खड़ी हो गयी और कहने लगी कि माँ

आपके आने के पहले दो आदमी आये थे, वे पेड़ों पर निशान लगा रहे थे, जिनको वे काटना चाहते थे। उन्होंने हमारे ऊपर भी निशान लगाया है। माँ यदि तुम चाहो तो मुझे बचा लो। यह मुझे कुछ अजीब सा लगा कि पेड़ की आत्मा कैसी रही होगी। पेड़ कैसे बात कर सकता है? उस समय माँ की उम्र लगभग नौ वर्ष की थी। उस पेड़ ने उस लड़की को माँ कहकर सम्बोधित किया था। यह कैसे हुआ और कैसे उसने माँ कहकर सम्बोधित किया? सोचा था कि जब आत्मा के सम्बन्ध में गुरू महाराज से पूछूँगा तो यह प्रश्न भी उनके समक्ष रखूँगा और उनसे इसका खुलासा लेने का प्रयास करूँगा।

हमारे गुरू महाराज ने समाधि 15 अप्रैल 1952 को ली और जहाँ तक स्मरण है 12 अप्रैल को उन्होंने अपने एक शिष्य (देवकी नन्दन) को बुलाकर कहा कि तेजेन्द्र के पास एक कार्ड भेज दो कि मैं शोहरतगढ़ अभी नहीं आऊँगा। बाद में किसी वक्त आऊँगा। इधर 15 अप्रैल को उन्होंने समाधि ले ली। वह कार्ड और एक तार भाई काशीनाथ का भेजा हुआ दोनों मुझे एक साथ, जहाँ तक मुझे स्मरण है तारीख 17 को मिले। उस समय मुझे कुछ अजीब सा लगा। एक तरफ तो कार्ड कहता था कि मेरे गुरू मेरे साथ अनिवार्य रूप से 15 दिन तक रहेंगे। दूसरी तरफ तार द्वारा सूचना मिल रही है कि उन्होंने समाधि ले ली। एक भ्रम उत्पन्न हो गया कि क्या मेरे गुरूजी को अपनी मृत्यु का भी पता नहीं था। लिखते हैं कि 15 दिन तक तुम्हारे साथ अनिवार्य रूप से रहेंगे, परन्तु शरीर छोड़ने के बाद यह कैसे सम्भव है। कभी जब ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है जब शिष्य अपने गुरू पर ही सन्देह करने लगता है तो उसकी प्रगति रुक जाती है। सोचने लगा कि इस प्रकार से गुरू के प्रति विचार करना उचित नहीं है। महाभारत में एकलव्य की कहानी तो आप लोगों ने पढ़ी ही होगी। एकलव्य ने जब द्रोणाचार्य से अनुरोध किया कि उसे भी धनुर्विद्या सिखायी जाये तो द्रोणाचार्य से नकारात्मक उत्तर मिलने पर एकलव्य ने द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बना कर उसके सामने बैठकर धनुर्विद्या सीखी तो इतना बड़ा धनुर्धारी

हो गया कि अन्ततोगत्वा द्रोणाचार्य को उससे उसका अगूँठा गुरू दक्षिणा के रूप में माँगना पड़ा। अत: मुझे भी अपने गुरू के प्रति निष्ठा में कोई कमी नहीं करनी चाहिये।

समय व्यतीत होता गया। 1958 का दिसम्बर माह आ पहुँचा। किसी आवश्यक कार्य से नेपाल के कपिलवस्तु प्रान्त के तौकिहवा जिले के मुख्यालय पर जाने का अवसर मिला। उन दिनों जहाँ भी जाना पड़ता था मैं घोड़े से ही जाता था। घोड़ा जब सुबह तैयार करके लाया गया तब तक मैं भी स्नान आदि करके तैयार हो चुका था। लेकिन घोड़े पर बैठने के पूर्व मुझे लगा कि शरीर कुछ गर्म है। अत: थर्मामीटर लगाया तो पता चला कि तापमान 102.6 डिग्री है। तबियत कुछ हिचकी कि ज्वर में 20 कि.मी. जाना और फिर 20 कि.मी. आना कुछ समस्या न पैदा कर दे। अत: पिताजी के पास कहला भेजा कि ज्वर हो गया है, सफर लम्बा है अत: आज न जाकर कल चला जाऊँगा। घोड़ा वापिस गया और मैं पुन: पलंग पर लेट गया। पिताजी ने कहला भेजा कि डाक्टर को बुलवा दें। मेरा उत्तर था कि हमारे गुरूजी ने कह रखा है कि जहाँ तक हो सके होम्योपैथिक दवा ही लेना। एलोपैथिक दवा से महत्वपूर्ण अंग (Vital Organs) क्षतिग्रस्त हो जाते हैं अत: उपवास द्वारा अपने आपको ठीक करने का प्रयास करूँगा। जब एलोपैथिक दवा लेनी ही नहीं है तो फिर डाक्टर को क्यों बुलाया जाये? यदि होम्योपैथ डाक्टर यहाँ पर होते तो सोचता भी। दो घण्टे के बाद पुन: नौकर यह बताने के लिए आया कि एक फलदार वृक्ष के जानकार आये हैं, वे होम्योपैथी के भी जानकार हैं कहो तो उनसे कहकर कोई दवा भिजवा दें। मेरा उत्तर था कि ठीक है यदि होम्योपैथिक दवा खाना है तो मैं खा लूँगा। थोड़ी देर के बाद नौकर एक पुड़िया दवा लेकर आया और कहा कि इसे खा लीजिये। उन्होंने सल्फर दिया था परन्तु उसकी तीव्रता नहीं बताई थी। उस वक्त मैं होम्योपैथी का कोई ज्ञान नहीं रखता था। कैसे उन्होंने सल्फर दिया आज भी समझ में नहीं आता है वह तो ज्वर में दिया नहीं जाता। जो भी हो दवा खाने के कुछ क्षण पश्चात् पता नहीं उस बीमारी में ऐसा

होता ही है या दवा की प्रतिक्रिया थी कि एक बारगी तापक्रम 106 डिग्री चढ़ गया और सारे बदन में ताप लहर (Heat Wave) चलने लगी। तबियत बहुत अधिक खराब होने के नाते मैंने नौकर से कहा कि मेरी पूजा वाली कोठरी में जाकर हमारे गुरू महाराज का एक चित्र लाकर हमारे पैताने वाले दीवार पर लाकर लगा दो। नौकर ने वैसा ही किया। जब से ज्वर 106 डिग्री हुआ पलकों का गिरना बन्द हो गया था। जिस तरह से एक बर्नर से आग निकलती है उसी तरह से दोनों आँखों से आग निकल रही थी न कि आँसू। लगता था कि जैसे किसी चिता पर, किसी जिन्दा आदमी को डाल दिया गया हो।

लगभग एक घण्टे बाद हमारी बड़ी चाची साहिबा पूजा अर्चना समाप्त करके, यह सुनकर कि मुझे ज्वर हो गया है मेरे कमरे में आईं। इसके पूर्व कि मुझसे कुछ पूछें, स्वयं कहने लगीं कि तुम्हें तो खसरा हो गया है। सारा कमरा धोया गया। बिस्तर भी उन्होंने ठीक कराया। जैसा कि हम हिन्दुओं में चलन है, नीम की टहनी चलवाने लगीं और मेरे पिताजी के पास कहला भेजा कि रात-दिन घोड़े पर घूमता रहता है इसे खसरा की बीमारी हो गई है, खसरे का संक्रमण हो गया है दो या तीन दिन लगेंगे ठीक हो जायेगा चिन्ता की कोई बात नहीं है। पिताजी निश्चिन्त हो गये। खसरे में तेज बुखार होता ही है। अतः सन्देह करने का कोई स्थान नहीं था। वे तैयार होकर नीचे से करीब एक या डेढ़ बजे हमारे कमरे में आये। उस समय कमरे में कोई नहीं था। देखते क्या हैं कि पलंग पर हमारे गुरूजी सोये हुए हैं। सोचने लगे कि शायद उन्हें बताया न गया हो और गुरूजी को सीधे मेरे पास पहुँचा दिया गया हो। तत्काल वे बरामदे में चले गये और नौकर से पूछने लगे कि लड़का कहाँ है। नौकर ने कहा कि पलंग पर लेटे हुए हैं। पिताजी ने उससे पुनः पूछा कि क्या वे ही पलंग पर लेटे हुए हैं। उत्तर मिला कि हाँ। उससे तो पिताजी ने कुछ नहीं कहा परन्तु सोचने लगे कि शायद कुछ बड़ी बात होने को थी इसलिए मेरे गुरू ने अपने शरीर को मेरे शरीर में समायोजित कर लिया है।

आजकल बड़े-बड़े विकसित देशों के लोग दूसरे लोकों में जाने का अभियान चला रहे हैं और उनका कहना है कि वहाँ जीवन ही नहीं है। किसी-किसी जगह पर पानी होने के नाते यह भी ख्याल रखते हैं कि वहाँ आदमी रह भी सकता है किन्तु कुछ दिखता नहीं है। लेकिन आत्मायें दूसरी जगह जाती हैं न कि शरीर। उन्हें देखने के लिये दिव्य चक्षु की आवश्यकता पड़ती है। इसलिये और लोकों में क्या है इसका सही आकलन तो वही कर सकता है जिसे दिव्य चक्षु प्राप्त हों। हमारे पिताजी के आँख का परदा कट चुका था। इसलिये वे सोये हुये हमारे गुरू को देख सके। यह मैं इसलिये भी कह रहा हूँ कि जब वे बद्रीनारायण गये थे तो वे अपने गुरू और अपने पिताजी को सशरीर जितने दिन तक रहे देखते रहे और उनसे बात भी करते रहे। क्या बातें हुई यह बताना आवश्यक नहीं है। और सच तो यह है कि कुछ ही बातें मुझे भी ज्ञात हैं और सच सब बताना मुझे भी वे आवश्यक नहीं समझे। औरों को तो मैं ही दिखायी पड़ता था। मुझसे तो एक शब्द भी नहीं पूछा परन्तु अपना पलंग मेरे कमरे में लगवा दिया। खाने-पीने के लिये ठंडे पानी में थोड़ा सा शहद मिलाकर थोड़े-थोड़े समय बाद देने का निश्चय किया गया और इधर बीमारी ने उग्र रूप धारण कर लिया। सब लोगों के दिमाग में आने लगा कि यह खसरा नहीं शायद Chicken Pox है। इस तरह से तीन-चार दिन बीत गये। दाने भी नहीं निकले और न पानी ही भरा। अब सब ख्याल करने लगे कि शायद चेचक (Small Pox) है। फिर घर के लोगों को लगा कि जब चार-पाँच दिन से यथावत स्थिति बनी हुई है तो नि:सन्देह कोई दूसरी बीमारी है। तत्काल गोरखपुर और बस्ती से बड़े-बड़े डाक्टर बुलाये गये। रक्त की जाँच भी दो बार करायी गयी। लेकिन सारी रिपोर्ट नकारात्मक आयीं। डाक्टर सब हतप्रभ थे कि आखिर लड़के को हुआ क्या है? दवा किसकी दी जाये।

इस प्रकार से जब पाँच-छ: दिन व्यतीत हो गये और हालत में कोई सुधार नहीं हुआ तो कान में यह आवाज आने लगी कि तुम्हें जो बीमारी हुई है वह तुम्हारे कुत्तों से हुई है। इसका तत्काल इलाज करवा लो।

आवाज में कोई यह भी कह रहा था कि अमुक इंजेक्शन ले लो। लेकिन किसकी आवाज है? कौन कह रहा है? मुझे इसका कोई पता नहीं लगता था। उसी बीच में मैंने दो रात को खुली आँखें होने के कारण आभा में देखा कि कई महान आत्मायें कुछ कर रही थीं उनमें विशेष रूप से माँ आनन्दमयी थीं। पिताजी के गुरू महात्मा रघुवर दयाल जी थे जिनसे मेरा परिचय था। उसी सन्दर्भ में मुझे ऐसा लगा कि माँ आनन्दमयी महाशक्ति की अवतार हैं। सबको देखने पर भी हमारे स्वयं के गुरू उनमें नहीं थे। यह अजीब सा लगा। जो भी मैं अच्छा-बुरा हूँ आशा करता था कि अपना बना लेने के पश्चात वे अवश्य ही मेरी तरफ से इतना उदासीन नहीं होंगे। जैसा भी हो उनको छोड़कर सभी महात्माओं के, जिनको मैं जानता था, दर्शन हुये।

इसी बीच जब हमारे छोटे चाचा साहब मेरे कमरे में आये तो मैंने उनसे कहा कि मेरे कान में कोई कह रहा है कि तुम्हें बीमारी तुम्हारे कुत्तों के कारण हुई है। जरा आप अपनी मेडिकल बुक में देखिये कि यह कौन सी बीमारी हो सकती है। उन्होंने अपना मेडिकल बुक मंगवाया। थोड़ी देर तक पढ़ने के बाद कहने लगे कि एक बीमारी कुत्तों से हो जाती है परन्तु वह बीमारी यूरोप में होती है न कि भारत में। यूरोप में बहुत से स्त्री-पुरुष अपने कुत्तों से इतना प्यार करते हैं कि उन्हें अपने पलंग पर ही बिठाते हैं। और उन कुत्तों के जो कीड़े होते हैं उनमें कुछ ऐसे भी कीड़े होते हैं जिनके काट लेने से टाइफस ज्वर हो जाता है। जिसका तत्काल इलाज न करने पर चौबीस घण्टे अथवा ज्यादा से ज्यादा अड़तालीस घण्टे के अन्दर उस मरीज की मृत्यु हो जाती है। चूँकि यह बीमारी अक्सर लोगों को हो जाती है वे उसी दिन टाइफस ज्वर का इंजेक्शन लेकर तुरन्त ठीक भी हो जाते हैं। मैंने काका साहब से कहा कि भारत में यह बीमारी होती हो या न होती हो मुझे यही बीमारी हो गई है। मेरे पास उस समय दो एलसेशियन कुत्ते थे। पूजा की कोठरी में जाने से पूर्व पूजा के कमरे के बाहर बैठे रहते थे। मुझे छूते भी नहीं थे। अन्यथा और समय जहाँ कहीं भी मैं रहता था मेरे पास ही रहते थे। जब

कभी कुर्सी पर बैठता था तो पैर नीचे रखने के स्थान पर एक पैर एक कुत्ते पर और दूसरा पैर दूसरे कुत्ते पर न रखे रहूँ तो वे आपस में लड़ पड़ते थे। उन्हें तभी सन्तोष रहता था जब एक पैर एक कुत्ते पर और दूसरा पैर दूसरे पर हो। बाहर चले जाने के बाद वे खाना नहीं खाते थे और रोते रहते थे। रात में किसी की मेरे पास आने की हिम्मत नहीं होती थी। परन्तु जब मैंने चाचा साहब से यह कहा कि मुझे वही बीमारी हो गई है तो तेज ज्वर के कारण मैं जो भी कहता था लोग मानते थे कि मैं सन्निपात की अवस्था में कह रहा हूँ। जबाव में बराबर यही लोग कहा करते थे कि जब बड़े-बड़े डाक्टर देख रहे हैं तो यदि कुत्ते से बीमारी होती तो डाक्टर नहीं कहते।

जब हम हार गये तो लोग समझते रहे कि सन्निपात की स्थिति में ही हम इधर-उधर की बात कर रहे हैं जिससे यथावत् स्थिति से कोई मतलब नहीं है, तो मैंने पिताजी से कहा कि आप एक टेलीग्राम हमारी तरफ से ठाकुर जयदेव सिंह जी को दे दीजिये; जो उस समय युवराज दन्त कॉलेज लखीमपुर में प्राचार्य के पद पर हैं और जब किसी समय मैं पढ़ता था तो मेरे अभिभावक भी थे। यह अन्दर की आवाज थी कि जब तुम्हारी बात को लोग नहीं मान रहे हैं तो तुम तत्काल एक तार ठाकुर जयदेव सिंह को दे दो वे आकर सही स्थिति से सबको अवगत कर देंगे। तार जो भिजवाया उसके शब्द इस प्रकार से थे। "My condition critical. Come at once." Tajendra. पिताजी ने पूछा कि यह तार उनको क्यों भेज रहे हो। मैंने कहा कि मेरे कान में ऐसी आवाज आ रही है कि तुम्हारी हालत बिगड़ती जा रही है। डाक्टर समझ नहीं पा रहे हैं, उनको बुला लो सब साफ हो जायेगा। उनको तार चला गया। अभी तीन दिन से बाहरी डाक्टर ठहरे हुये थे। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि लड़के को कौन सी बीमारी है और कौन सी दवा दी जाये। इस प्रकार से नवें दिन की रात आ गयी। मैं देखता क्या हूँ कि मेरे अन्दर से कोई चीज निकली और बाहर जमीन पर पड़ी हुई है। उसी समय एक आवाज आती है कि तुम आत्मा देखना चाहते थे यही

तुम्हारी आत्मा है। मैं तो उसे देखकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। ऐसा प्रकाश तो आज तक कभी देखा न था। उसमें अद्वितीय परम धवल प्रकाश था और लपटों से राम-राम की ध्वनि निरन्तर निकल रही थी। देखते ही लगा कि यह आत्मा का स्वरूप हो सकता है। जब किसी वस्तु में प्रकाश होता है तो समीप के सभी स्थान प्रकाशित हो जाते हैं। परन्तु इसमें मैंने देखा कि आत्मा के चारों तरफ करीब डेढ़ फुट चारों तरफ उसका प्रकाश जा रहा था और बाकी जगह अँधेरा था। एक कपड़े में मिट्टी का तेल अच्छी तरह भिगो दीजिये फिर उसमें आग लगा दीजिये। जब वह जलने लगता है तो नीचे का हिस्सा कपड़े के नाते चौड़ाई लिये रहता है और ऊपर का हिस्सा केवल लपटों के नाते कुछ पतला रहता है। लेकिन उसका प्रकाश दिखता है। इसमें तो परम धवल प्रकाश था और केवल सीमित दूरी तक ही उसका प्रकाश जा रहा था। सहसा देखता क्या हूँ कि दो काले काले आदमी खड़े हैं जो कि इशारे से कह रहे हैं कि इसी को तो ले जाना है। दूसरा कहता है कि देर किस बात की ले चलो। मुझे उस समय ऐसा लगा कि मेरी मौत आ गयी है। तभी आत्मा को देख रहा हूँ साथ ही साथ यमराज के दूतों को भी देख रहा हूँ। आत्मा से तो निरन्तर मेरा मन्त्र ''राम'' स्वत: निकल रहा था। मैंने विचार किया कि इस समय हर तरफ से ध्यान हटा कर मुझे भी अपना मन्त्र कहना आरम्भ कर देना चाहिये। अत: मैं भी अपना मन्त्र ''राम'' मन ही मन जपने लगा। जब वे दोनों आत्मा के पास पहुँचे तो प्रकाश में हाथ नहीं डाल सके। उनका हर प्रयास विफल हुआ। और वे जहाँ पहले खड़े थे वहीं आ गये। वहाँ पहुँचने पर एक ने दूसरे से कहा कि जाकर बतला दो कि हम इस आत्मा को नहीं ला सके। उनमें से वह कब गया मुझे नहीं मालूम लेकिन थोड़ी देर बाद देखता हूँ कि जहाँ दो खड़े थे वहाँ पर दो तीन लोग और खड़े दिखाई पड़ने लगे। उनमें एक बड़ा लहीम-फहीम कद्दावर जवान दिख रहा था। वे सभी काले ही थे। उनमें से जो एक सबसे कद्दावर और मालिक जैसा लगता था आते ही जो पहले दोनों आये थे उनको डाँटने लगा। 'इसको लाने के लिए मुझे दौड़ा

दिया।' उनमें से एक ने कहा कि हम दोनों से यह नहीं जा सका इसलिये आपको तकलीफ देनी पड़ी। यह सुनकर बड़े कद वाला आदमी स्वयं चला लेकिन वह भी प्रकाश के अन्दर हाथ नहीं डाल सका। तत्काल लौट कर कहने लगा चलो सामूहिक रूप से चलकर इसे उठा ले चलें। वे जैसे ही चले, उसी समय एक देवी माँ प्रकट हुई जिनके सब हाथों में तो अस्त्र थे परन्तु एक हाथ खाली था। मेरी आत्मा को खाली वाले हाथ में तत्काल उठा लिया। वे कहने लगीं "इसको ले जाने के पूर्व पहले मुझसे युद्ध करना होगा।" उनके हाथ में आत्मा के होने पर भी वही प्रकाश और उसकी लपटों से राम-राम निकल रहा था। युद्ध शब्द देवी माँ के मुँह से निकलते ही वह जो चलचित्र था जो मैं देख रहा था गायब हो गया और जैसे चारों तरफ अँधेरा था वहाँ पर भी अँधेरा हो गया। वह अन्धकार कब तक रहा नहीं कह सकता। उसी अवधि में जो दो डाक्टर गोरखपुर और बस्ती से आये थे अपना-अपना सामान लेकर घर वापिस चले गये। लगता है कि नाड़ी बन्द हो गयी थी और वे समझने लगे थे कि इसकी मृत्यु हो गयी है या मृत्यु के करीब है। लेकिन पता नहीं क्यों और कैसे सब लोग कमरे से बाहर हो गये थे। केवल स्थानीय डाक्टर और मेरी बड़ी चाची साहिबा बैठी रह गयी थीं। थोड़ी देर के बाद जो अन्धकार आ गया था वह दूर हो गया और पहले की भाँति चलचित्र दिखने लगा। इस बार परदा कहूँ या क्या कहूँ केवल मुझे देवी माँ प्रकाश के लौटते ही दिखीं। उनके पीठ का हिस्सा मेरी तरफ और सामने का हिस्सा विपरीत दिशा में था। देखता क्या हूँ कि उन्होंने आत्मा को पुनः फेंक दिया जो कि जमीन पर पड़ी हुई थी उसी प्रकार प्रकाश और लपटों से मन्त्रों की ध्वनि आ रही थी। वे कहती क्या हैं कि इसको तो तुम वैसे भी नहीं ले जा सकोगे। मैंने पुनः फेंक दिया है। साहस हो तो ले जाओ। लेकिन जब दूसरी तरफ निगाहें गयीं तो देखता क्या हूँ जो सब लोग आये हुये थे, पंक्तिबद्ध होकर वापस जा रहे हैं।

थोड़ी देर तक तो देवी माँ आत्मा की तरफ देखती रहीं फिर जैसे

कोई स्प्रिंग लगा हो बिना किसी प्रयास के वह आत्मा पुन: उठी और मेरे अन्दर प्रवेश कर गई। उसके प्रवेश करने के पश्चात् देवी माँ ने अपना चेहरा हमारी तरफ कर लिया। थोड़ी देर तक पता नहीं क्या देखती रहीं। फिर बोलीं ''सच में तुम्हें बहुत कष्ट मिला, बहुत कष्ट मिला।'' कई बार दुहराती रहीं। फिर बोलीं ''अच्छा जा अब तू नहीं मरेगा और जो बीमारी है वह धीरे-धीरे ठीक हो जायेगी।'' इसके पश्चात् उनका शरीर एक प्रकाश में परिवर्तित हो गया और फिर प्रकाश भी जाता रहा। मैंने तत्काल अपनी अम्मा अर्थात बड़ी चाची से कहा कि देवी माँ ने कहा है कि तुम अभी मरोगे नहीं। लेकिन मैंने उनसे यह नहीं कहा कि उन्होंने यह भी कहा कि सब बीमारी भी धीरे-धीरे ठीक हो जायेगी। उस समय भी लोगों का विचार था कि हम जो कुछ भी कह रहे हैं वह सन्निपात की अवस्था में कह रहे हैं न कि किसी देवी ने कहा है। उनका उत्तर था कि बेटा कौन कहता है कि तुम मरोगे और उठकर मेरी आँखों पर हाथ फेरते हुए कहा ''तुम थोड़ी देर किसी तरह आँखें बन्द कर लो और सो जाओ।'' मेरा उत्तर था कि जब आँख से बर्नर की तरह आग का शोला निकल रहा हो तो कैसे आँख बन्द कर लूँ। इसके बाद वह कमरे से कब बाहर गयीं पता नहीं। तत्काल जोरदार शक्ति का अवतरण हुआ। जैसे नायिग्रा फॉल से पानी की धारा गिरती है उसी प्रकार एक मोटी धारा सहस्रार से शक्ति की चली। और वह मूलाधार चक्र तक आयी और फिर वह शक्ति मूलाधार से वापिस होकर सहस्रार तक गयी। इस प्रकार से शक्ति की धारा ऊपर नीचे चलने लगी। क्षण भर बाद उसमें से अनगिनत धारायें फूटीं जैसा कि आतिशबाजी में आप लोगों ने देखा होगा। और उन धाराओं ने अवयव के हर हिस्से में जो बीमारी की धारायें चल रही थीं उन्हें बुझा दिया। यहाँ तक कि दाँतों में भी उनकी पकड़ थी। और लगता था कि दाँतों को कोई ठोककर मजबूत कर रहा हो। बीमारी की धाराओं को शान्त करने के पश्चात् वे अनगिनत धारायें स्वत: अपने पुराने स्थान में लय हो गयीं। लेकिन वे इतनी तेज चल रही थीं और उनमें इतनी गर्माहट थी कि पीठ की हड्डी गरम लोहे के समान

हो गयी। पीठ के बल सोना भी कठिन हो गया। प्रातः होते ही मैंने पिताजी से कहा कि एक कलम और कागज लेते आइये और एक पत्र लिख दीजिये। वे चुपचाप कागज और कलम लेकर आये। मैंने बोलकर माँ आनन्दमयी को एक पत्र लिखवाया। पहली शिकायत तो यह थी कि शक्ति का वेग इतना तेज है कि पहले तो लगता था कि बीमारी की धाराओं से ही शरीर छूट जायेगा परन्तु अब लगता है कि शक्ति के वेग से ही शरीर छूट जायेगा। माँ से प्रार्थना की कि इस वेग को कम करो। इस प्रश्न के नीचे तीन-चार प्रश्न और पूछे थे जो कि अब याद नहीं आ रहे हैं। पिताजी बहुत दिनों के बाद कहते थे कि बहुत विचित्र प्रश्न थे। वह पत्र पोस्ट भी नहीं हुआ होगा कि शक्ति की धाराओं में कमी आ गई और इतना हो गया जहाँ हम पीठ के बल सो नहीं पा रहे थे और पीठ की हड्डी लोहे के समान गर्म रहती थी अब इतना गर्म रहने लगी जिसे हम बर्दाश्त कर सकते थे।

शक्ति की धाराओं से जो बीमारी की धारायें बुझीं उसके बाद पहली बार नौ दिन के बाद आँखें स्वतः बन्द हुईं और मैं 5 मिनट के लिये सो गया। पाँच मिनट के बाद पुनः आँखें खुलीं और खुली रहीं। पुनः आँखें बन्द हुईं और 10 मिनट तक सोया। इस प्रकार सोने और जागने के क्रम में निरन्तर सुधार होता गया और उसकी अवधि बढ़ती गयी। लेकिन ऐसा लगता था कि कोई घड़ी देखकर सोने और जगने का क्रम बढ़ाता हो। प्रातः होने पर घर के और लोग आते गये और पूछते गये कि तबियत कैसी है। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि इसे आखिर हो क्या गया था। इतनी बड़ी बीमारी बिना दवा के कैसे ठीक हो गयी। मेरा उत्तर रहता था कि सिवाय इसके कि कमजोरी है और ठीक हूँ। घटना के सम्बन्ध में किसी से कुछ कहना उचित नहीं समझा। जब से बीमार पड़ा, पिताजी एक शब्द भी नहीं बोले। कोई चीज माँगता था तो या तो उसे मंगवा देते या स्वयं ले आते थे लेकिन कुछ बोलते नहीं थे। खाने के क्रम में जहाँ तक मुझे याद है पानी में शहद डालकर दिया जाता रहा और कुछ नहीं।

अब रात हुई। सहसा मैं देखता हूँ कि मुझे कहीं उठाकर ले जाया गया। जहाँ ले गये उस स्थान पर मुझे दिखा कि मिट्टी से पटा हुआ एक बड़ा सा मंच है। उस पर एक बड़ा सा भगौना रखा है। और उसी के अनुरूप एक करछुल था। उसी मंच के सामने से एक रास्ता निकलता था जो कि नीचे की तरफ जाता था। यह भी मिट्टी का ही पटा हुआ था। उस पर संन्यासियों की अपार भीड़ थी। जो ऊपर जाते थे उन्हें उसी भगौना से एक पत्तल में प्रसाद मिलता था। और उसी रास्ते से एक पंक्ति बनाकर वापस आते थे। कहाँ से आते थे और कहाँ जाते थे पता नहीं। उस समय मैंने अपने को उस स्थान से 50-60 गज दूर एक खम्भे के सहारे खड़े पाया। और वहीं से उस अपार संन्यासियों की भीड़ को देख रहा था। उस भीड़ में संन्यासियों के अतिरिक्त कोई भी गृहस्थ मुझे दिखा नहीं। थोड़ी देर बाद उसी लौटने वाले संन्यासियों की पंक्ति में से देखता क्या हूँ कि एक संन्यासी प्रसाद का पत्तल लिए अपना रास्ता बदल कर सीधा हमारी तरफ चला और मेरे पास पहुँचकर कहता है कि ''बेटा तुम बहुत कमजोर हो गये हो तुम इस भीड़ में कैसे जा सकोगे। लो इस प्रसाद को ले लो मैं फिर दूसरा ले लूँगा। हाथ आगे बढ़ाओ'' यह कहते हुए उसने पत्तल का प्रसाद मुझे दे करके पुनः जिस रास्ते से आये थे वापस हो गये।

सहसा मेरी निगाह मंच के दूसरी तरफ गई तो देखता क्या हूँ कि एक संन्यासी जो मंच पर खाली हाथ खड़े हुये थे दूसरे से कह रहे थे कि उस प्रसाद को मत खाना। इसे संकेत से बताने के बाद वह कहाँ चले गये, कितनी देर गायब रहे मालूम नहीं लेकिन जब लौटे तो उनके हाथ में एक बड़ा सा कटोरा था। उस कटोरे के साथ उसी पटे हुए मिट्टी के रास्ते से नीचे आये। फिर रास्ता छोड़ करके सीधे मेरी तरफ मुड़े और मेरे पास आकर कहने लगे कि जो प्रसाद तेरे हाथ में है वह सार्वजनिक के लिए है। तुम्हारी हालत इतनी बिगड़ गयी है कि उससे तुम्हारे शरीर की रक्षा नहीं हो सकेगी। इसलिये आदेशानुसार तुम्हारे लिये एक विशेष प्रसाद बनवाया गया है। लो बेटा इस प्रसाद को तुम पूरा पी

लो। इससे तेरे शरीर में तत्काल शक्ति आ जायेगी। और सार्वजनिक प्रसाद वाला पत्तल तुम मुझे दे दो।'' यह कहते हुये जो प्रसाद का पत्तल मेरे हाथ में था ले लिया और अपने हाथ का कटोरा जिसमें प्रसाद था मुझे पकड़ा दिया। यह कहते हुये ''लो बेटा यह बहुत उपयोगी प्रसाद है। इससे तत्काल तेरे अन्दर शक्ति आ जायेगी।'' मैंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने निर्देश दिया था। उस कटोरे में सूप जैसा कोई पदार्थ था। मुँह में लगाते ही ऐसा लगा जैसे अमृत पी रहा हूँ। इतना स्वादिष्ट सूप आज तक कभी नहीं पीया था। पूरे कटोरे का सूप पीते ही कटोरा वापस हुआ नहीं था कि मैंने पुनः अपने को अपने पलंग पर पाया।

जब पढ़ते थे तो साइंस कक्षा में बतलाया गया था कि आवाज की गति 70,000 मील प्रति सैकेण्ड है और प्रकाश की गति 1,86,000 मील प्रति सैकेण्ड है। लेकिन यह कौन सी गति थी कि कटोरा के पीते ही मैं अपने को पलंग पर पाता हूँ। पहले तो यह सन्देह हुआ कि क्या यह स्वप्न तो नहीं था। या सच में हम किसी दूसरे लोक में ले जाये गये थे।

बचपन में मैं भूत की कहानियाँ बहुत सुना करता था। कभी भूत देखकर हम भागने में सफल हो जाते थे। कभी बड़े-बड़े कदम बढ़ाकर भूत मेरे बालों को पकड़ लेता था तो सोते समय मैं चीख पड़ता था। पिताजी के पास ही मैं सोता था। वे बोल उठते थे कि क्या हुआ। मेरा उत्तर होता था कि भूत ने मेरा बाल अभी पकड़ा था। तत्काल डाँट पड़ती थी कि कहाँ है भूत, भूत की कहानी मत सुना करो। सुबह नौकर को भी डाँट पड़ती थी कि बच्चे को भूत की कहानियाँ क्यों सुनाते हो? रात भर यह सोने नहीं देता है। भूत भले ही न रहते हों लेकिन उसके बाल पकड़ने पर, छूटने पर भी मुझे बाल में दर्द मालूम पड़ता था। तब मैंने विचार किया कि जो मुख में स्वाद मिल रहा है वह उसी तरह तो नहीं है। लेकिन एक तरफ होंठ के नीचे जो पदार्थ पीया था वह बह गया था। इससे विश्वास हो गया कि पीया कुछ अवश्य था। जिसे मैंने पास में रखे हुये छोटे तौलिये से पौंछा भी। फिर ध्यान में आया कि

संन्यासी जी कह रहे थे कि तत्काल तेरे अन्दर शक्ति आ जायेगी। तो देखें यह सही भी है। उस समय बिना किसी दूसरे का सहारा लिये पलंग पर करवट भी नहीं ले पाता था। अब करवट लिया तो बिना किसी सहारे के करवटें लेने में सफल हुआ। पलंग पर बैठने का प्रयास किया तो उसमें भी सफल रहे। इससे विश्वास हुआ कि यह स्वप्न नहीं था। दरअसल कहीं ले जाया गया था।

दूसरे दिन सुबह चार बजे जब कि काफी अँधेरा था उठकर नौकर को बुलाकर कहा कि मेरे पीछे जरा मसनद लगा दो। थोड़ी देर ध्यान करेंगे। ध्यान भी कुछ अजीब सा हुआ, कितनी देर बैठे रहे कुछ याद नहीं। काफी दिन चढ़ आने पर जब प्रकाश हुआ तो आँखें खुलीं। बाहर एक Ornamental Palm का पेड़ था। उस पर जब नजर पड़ी तो उसमें छाता और लकड़ी के स्थान पर मुझे वह पेड़ सजीव दिखा। उसके अन्दर धमनियों में रक्त प्रवाहित हो रहा था। इतना ही था कि मनुष्य की नाड़ियों में लाल रक्त प्रवाहित होता है और उस पेड़ में मुझे श्वेत रक्त प्रवाहित होता दिखायी पड़ा। तुरन्त ध्यान में आया कि यदि यह सत्य है तो पाण्डुचेरी माँ की आत्म कहानी में जो लिखा है असत्य नहीं हो सकता। थोड़ी और देर होने पर मैंने नौकर से कहा कि ज़रा आइना तो उठाओ। अपना चेहरा देखना चाहता हूँ। लेकिन तब तक पिताजी उठ गये थे। उन्होंने नौकर से आइना न लाने के लिये कहा। शायद उन्होंने सोचा कि इतने दिनों से कुछ खाया पीया नहीं है। आँखें धँस गयी हैं, दाढ़ी बढ़ गयी है। अपना चेहरा देखकर घबड़ा न जाये। जो भी हो चेहरा देखने को नहीं मिला।

दिन में ख्याल आया कि इस बीमारी में महात्माओं को देखा लेकिन इतनी बीमार अवस्था में अपने गुरू को क्यों नहीं देखा। क्या वे मुझसे इतने नाराज हैं, रुष्ट हैं कि दर्शन भी नहीं दे सके। वह दिन भी व्यतीत हुआ। रात आयी फिर वही बात दुहरायी गयी। मैं अपने बिस्तर से सहसा गायब हुआ फिर उसी खम्भे के सहारे अपने को खड़ा पाया जहाँ कल खड़े थे। कुछ ही दूर पर वही मंच और उसी से निकलती हुई सड़क

जिस पर संन्यासियों की अपार भीड़ थी। केवल इतना ही था जहाँ पहली बार मेरे आने पर प्रसाद देने संन्यासी जी आए थे। इस बार प्रसाद लेकर तैयार नजर आये। मुझे देखते ही एक पत्तल पर कोई सफेद पदार्थ लेकर मेरे पास आ गये। मेरे पास आते ही बड़े प्यार से कहा ''ले बेटा यह प्रसाद ले इसे पूरा खाना है। तेरे अन्दर पहले की तरह इसको खाने पर और शक्ति आ जायेगी।'' इस बार सूप के स्थान पर कोई चीज सफेद घर के दही से निकाले हुए मक्खन जैसा ठोस पदार्थ था। उसका भी स्वाद अद्वितीय था। जब तक पूरा नहीं खा गये वे खड़े रहे। पूरा समाप्त होते ही वही बात पुनः हुई। मैं अपने बिस्तर पर पुनः पहुँच गया। इस बार तो सन्देह करने का कोई प्रश्न ही नहीं था। मुँह पर खाने वाले उस पदार्थ का अवशेष लगा हुआ था। जिसे मैंने तौलिये से साफ किया। बिना कोई और परीक्षा लिये सो गया। दूसरे दिन सुबह फिर थोड़ी देर ध्यान में बैठे और दिन हो जाने पर भी क्योंकि पिताजी सो रहे थे, मैंने मुख देखने के लिये दूसरे नौकर से आइना माँगा। आइने में मुख देखते ही मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। उसमें मेरे स्थान पर मेरे गुरू का चेहरा दिखा। पहले तो समझ ही नहीं सका कि मैं यह क्या देख रहा हूँ। आइने में तो गुरूजी की शक्ल दिखायी दे रही थी। आइने को अच्छी तरह से साफ किया गया और पुनः देखा तो स्पष्ट उन्हीं का चेहरा दिखा। तत्काल ध्यान में आया कि लगता है कि उन्होंने अपने को मेरे अन्दर समायोजित कर लिया है। इस तरह अन्य महात्माओं के साथ उन्हें देखने का कोई प्रश्न ही नहीं था। बड़ी सोच में पड़ गया कि मेरे कारण उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। बीमारी में धाराओं का ज्वर बहुत तेज हो जाता था और लगता था कि आत्मा शरीर से अब बाहर हो जायेगा तो थोड़ी देर के लिये सहसा सब सुन्न हो जाता था। और सुन्न हो जाने से थोड़ी राहत मिल जाती थी। लगता है कि ऐसी स्थिति में मेरी सारी बीमारी का बोझ वे अपने ऊपर ले लिया करते थे। 'पन्द्रह दिन मैं तेरे साथ अनिवार्य रूप से रहूँगा' यह राज़ तो खुल गया। परन्तु यह पता नहीं लगा कि वे अपने को मेरे अन्दर कितने दिन से समायोजित किये हुए थे। लेकिन और

सबसे कुछ कहना उचित न समझकर मैं सब कुछ जानकर चुप रहा।

दूसरे दिन किसी ने कहा कि ठाकुर जयदेव सिंह लखीमपुर खीरी से आपको देखने आये हैं। मैंने तत्काल उनको बुला लिया। वे स्वयं बहुत उच्च कोटि के साधक रहे हैं। उनके गुरू रघुवर दयाल जी थे। जिनके नाम पर कानपुर में आर्य नगर में रघुवर दयाल मार्ग है। कमरे में पैर डालते ही उन्होंने कहा कि इस कमरे में तो शक्ति का बहुत तेज वेग है। उनके प्रश्न का उत्तर न देकर मैंने उनसे पूछा कि मेरा तार पाकर आप आये हैं। उनका उत्तर था कि नहीं। इस रात के पहली वाली रात मुझे अपने गुरूजी का स्वप्न हुआ कि तुम तत्काल शोहरत गढ़ चले जाओ, उसकी तबियत बहुत खराब है। बीमारी क्या है किसी की समझ में नहीं आ रही है। सब डाक्टर हतप्रभ हैं। जाकर के जो इंजेक्शन तुम्हारे यहाँ राजा साहब के बड़े लड़के को डा. कुक्कू ने दिया था वही दिलवा दो। वही इंजेक्शन न देने के कारण तुम्हारे मास्टर साहब का चौबीस घण्टे के अन्दर स्वर्गवास हो गया था। ठाकुर साहब कहने लगे कि मैंने अपने गुरूजी से पूछा कि क्या कुछ गड़बड़ तो नहीं हो जायेगा। उन्होंने कहा कि किसी प्रकार बच तो जायेंगे परन्तु हालत बहुत खराब है। अत: किसी भी तरह एक दिन के लिये वहाँ जाकर वह इंजेक्शन दिलवा दो। स्वप्न होने के दूसरे दिन सुबह ही मैं चल दिया। स्टेशन पहुँचने पर तुम्हारा तार मिला। लेकिन उसके पहले गुरूजी के आदेशानुसार मैं चल दिया था। मेरे पूछने पर यह कौन सी बीमारी थी। उन्होंने कहा कि यह टाइफस ज्वर था। इसके हो जाने के चौबीस घण्टे के अन्दर मरीज की मृत्यु हो जाती है। चौदह-पन्द्रह दिन हो जाने पर भी तुम कैसे जीवित हो और बिना दवा के कैसे तुम ठीक हुये। मैं मौन रहा कुछ कहा नहीं। उन्होंने फिर कहा कि इतनी दूर से आया हूँ मेरी एक प्रार्थना मान लो। तुम्हारी तबियत तो ठीक है देख रहा हूँ। लेकिन मेरे कहने से एक ही इंजेक्शन जिस दवा की कहता हूँ लगवा लो। मेरी यही इच्छा है। इस बीमारी में 24 घण्टे 48 घण्टे 72 घण्टे में ही मृत्यु हो जाती है। पता नहीं तुम कैसे जीवित हो? मैं वह इंजेक्शन लगवाकर चला जाता हूँ। बड़ा

काम है, इस समय कालेज में अवकाश नहीं है। अत: उनकी इच्छानुसार स्थानीय डाक्टर ने ठीक होने पर भी एक इंजेक्शन उस दवा का लगा दिया। उस समय बदन इतना सुन्न हो गया कि इंजेक्शन लगाने पर भी मुझे पता नहीं चला। वे चन्द घण्टे और रहे और कहने लगे यह बीमारी यूरोप में होती है। क्योंकि वहाँ बहुत से स्त्री पुरुष अपने कुत्तों को लेकर पलंग पर ही सोते हैं जिसके कारण उनको जो कीड़े लगे होते हैं उनमें इस बीमारी वाले कीड़े भी होते हैं और जो काट लेते हैं तो यह बीमारी हो जाती है। वहाँ के लिये तो ये मामूली सी बात होती है। तत्काल इंजेक्शन लग जाने से वह व्यक्ति बच जाता है। मैंने उस समय उनसे यह भी नहीं कहा कि मेरे छोटे चाचा साहब के मेडिकल बुक में टाइफस ज्वर का जिक्र है। लेकिन मुझे सन्निपात की अवस्था में समझ कर घर के लोगों ने कोई ध्यान नहीं दिया। वे दो चार घण्टे और रुक कर और यह देख कर कि मैं ठीक हो रहा हूँ चले गये। पचासों वर्ष हो जाने के नाते मुझे यह याद नहीं है कि दो ही दिन, दो ही बार खाना खाने के लिये मुझे परलोक की यात्रा करनी पड़ी थी या और भी।

दूसरे दिन जब सुबह हुई तो मेरे बड़े चाचा साहब मेरे कमरे में आये और यह देखकर कि मैं सो रहा हूँ पिताजी से कहा कि लड़के से एक ग़ल्ती हो गई है। खेत में आम का एक बड़ा सा पेड़ था जिसे इसने कटवा दिया है। इस समय पेड़ काटने पर रोक है बल्कि पेड़ काटना जुर्म है। एस.डी.एम. महोदय ने सभी लेखपालों से पूछा था कि कहीं कोई पेड़ किसी ने काटा या कटवाया है। इसके हल्के के लेखपाल ने इसका नाम बतलाते हुये बताया है कि अपने खेत के एक पेड़ को कटवाया है। छाया के कारण फसल नहीं हो पा रही थी। वह पेड़ बहुत बड़ा था। अभी वह खेत में पड़ा है। अब यह सुनकर आज प्रात: एस.डी.एम. महोदय पेड़ देखने जाने वाले हैं और इसे अरेस्ट करने के लिये दो कांस्टेबल भी साथ ले जायेंगे। यदि बात सही पाता है तो इसको अरेस्ट करने के लिये यहाँ आयेगा। इनकी इतनी खस्ता हालत है क्या करूँ मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। मैं सो नहीं रहा था। अन्दर एक तूफान

चल रहा था कि राम मन्त्र जहाँ तक हो सके गाँव-गाँव और कस्बे-कस्बे में बाँट दो। केवल आँखें ही बन्द किये हुये था। अत: जो कुछ भी उन्होंने पिताजी से कहा मैंने नहीं सुना। तत्काल आँखें खोलते हुये इसके पूर्व कि पिताजी उनसे कुछ कहें मैंने कहा कि कुछ नहीं होगा आप लोग परेशान मत हो। ''वैसे तो एस.डी.एम. यहाँ आयेगा ही नहीं यदि आया भी तो वापस चला जायेगा।'' पिताजी तो देख ही रहे थे कि मेरे स्थान पर मेरे गुरू सोये हुये हैं। वे तो निश्चिन्त हो गये कि गुरूजी कुछ करेंगे। मैं अरेस्ट नहीं होऊँगा। लेकिन बड़े चाचा साहब की परेशानी पूर्ववत् रही। उन्होंने कहा ''अरे बच्चा, कानून कानून है वह अरेस्ट अवश्य करेगा। बहुत सख्त एस.डी.एम. है।'' पुन: मेरा उत्तर था आप देखियेगा कुछ नहीं होगा। फिर बिना कुछ कहे हुये वह नीचे चले गये। कुछ बोले नहीं। इधर एस.डी.एम. जब पुलिस फोर्स के साथ मौके पर गया तो वहाँ लेखपाल साइकिल लेकर उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। मोटर के पहुँचते ही उसने हाथ के इशारे से कहा, देखिये सामने पेड़ कटा पड़ा है। नि:सन्देह पेड़ सामने खेत में कटा पड़ा हुआ था। लेकिन एस.डी.एम. को दिखा कि वहाँ जो भी पेड़ हैं सब खड़े हैं। बार-बार दिखाने पर भी उसे कटा हुआ पेड़ नहीं दिखा। अत: उल्टे उसने लेखपाल को ही डाँटना शुरु कर दिया। जब पेड़ कटा ही नहीं है तो मुझे 30 मील क्यों दौड़ा दिया। नाराज हो करके लेखपाल को भी मोटर में बिठा लिया और उसे जिला मुख्यालय ले गया और उसे मुअत्तल (Suspend) करने लगा। यह कहते हुये कि नाहक तुमने मुझे 30 मील दौड़ा दिया। बड़ी कठिनाई से हाथ पैर जोड़कर और यह कहकर कि अब ऐसी गल्ती नहीं करूँगा तब उसे छोड़ दिया। लेखपाल को छुट्टी मिलने पर वह सीधे मेरे चाचा साहब के पास आकर कहने लगा कि ऐसा तो अंधेर मैंने नहीं देखा कि वह कटा हुआ पेड़ सबको तो दिख रहा था परन्तु परगना अधिकारी को नहीं दिखा। हमारे चाचा साहब को भी समझ में नहीं आया कि यह चमत्कार कैसे हो गया। दूसरे दिन आकर वे मुझसे कहते हैं कि तुम्हारी बात सही निकली। एस.डी.एम. को कटा हुआ पेड़ दिखा ही नहीं। अब

उनको क्या पता कि उस वक्त जो भी कुछ कह रहे थे वे हमारे गुरू कह रहे थे न कि मैं।

इस प्रकार से दो एक दिन और व्यतीत हो गये। चूँकि हमारे गुरू अपने को हमारे शरीर में समायोजित किये हुये थे जो कोई भी हमारे कमरे में आता था उसका X-Ray सा हमारे दिमाग में हो जाता था। वह आदमी अच्छा है या बुरा है मुझे देखते ही अनुभव होने लगता था। एक व्यक्ति के आने पर अन्दर से तबियत होती थी कि किसी तरह यदि यह मेरे कमरे से बाहर हो जाय तो अच्छा हो।

दो एक दिन और व्यतीत हुये फिर हमारे पिताजी आये और इतने दिनों के बाद प्रथम बार यह पूछते हैं कि तुम्हारी तबियत कैसी है। मेरा उत्तर था कि इतने दिनों से मैं बीमार था आप कुछ नहीं बोले। करवट बदलने के लिए कहता था तो आप स्वयं न करके नौकर आदि को बुलवा कर करवट बदलवा देते थे। आज कौन सी बात हो गयी कि आप मुझसे पूछ रहे हैं कि तबियत कैसी है। वे कहने लगे कि क्या करें कल तक तो तुम्हारे स्थान पर तुम्हारे गुरू को सोया हुआ देख रहा था। आज प्रथम बार तुम्हें सोया हुआ देख रहा हूँ। जब तक उनको सोया हुआ देख रहा था उनके शरीर को कैसे स्पर्श करता। इसीलिये करवट करने के लिये किसी दूसरे को बुलाना पड़ता था और उनसे क्या पूछते कि तुम्हारी तबियत कैसी है। मैंने कहा कि आपने कितने दिनों तक मेरे स्थान पर मेरे गुरूजी को लेटा हुआ देखा। उन्होंने कहा कि वैसे तो मैंने पहले दिन से ही उन्हें लेटा हुआ पाया। लेकिन कल तक कितने दिन होते हैं जोड़कर बतलाता हूँ। थोड़ी देर में उन्होंने कहा कि 15 दिन तक उन्हीं को मैंने देखा। मैं तो स्तब्ध रह गया। '15 दिन तक तेरे पास अनिवार्य रूप से रहूँगा' वह सही था। पिताजी ने पूछा यह दिन क्यों पूछ रहे हो। उनसे कुछ भी कहना और क्या-क्या अनुभव हुआ यह बताना मैंने उचित नहीं समझा। इस प्रकार से मेरे तीनों प्रश्नों के उत्तर मुझे इस बीमारी में प्राप्त हो गये।

बीमारी से स्वस्थ होने के कई दिनों बाद पिताजी ने पूछा कि जो पत्र तुमने माँ आनन्दमयी को लिखवाया था उसका उत्तर आया? मैंने उनको बतलाया कि काफी दिनों बाद माँ का मुझे स्वप्न हुआ था कि तेरे पहले प्रश्न का उत्तर तो तुझे तत्काल मिल गया होगा। क्रिया का वेग कम हो गया होगा। लिखी तो नहीं थीं फिर भी जो खत गया था वह हाथ में लिये हुये थीं और एक-एक प्रश्न का उत्तर स्वयं जुबानी देती गयीं। उनका कहना था कि ये प्रश्न ऐसे हैं जिनका उत्तर किसी से लिखवाया नहीं जा सकता था। मैंने पिताजी से कहा चूँकि पत्र आपने लिखा था मैं उन प्रश्नों का उत्तर आपको बता दूँ। उनका उत्तर था कि प्रश्न तो दरअसल बहुत गम्भीर थे और अजीबोगरीब थे। तुम्हें यदि उत्तर मिल गया हो तो मुझसे मत कहो। स्वामी विवेकानन्द कहते थे सच्चा गुरू वह होता है जो चेलों के शरीर में प्रवेश करके चेलों के ही कान से सुन सके, चेलों के ही आँखों से देखने की और उसी के मुख से बोलने की क्षमता रखता हो। महाराज में ये सब गुण थे।

इस घटना के सम्बन्ध में जो लोग भी पढ़ेंगे उन्हें लगेगा कि मेरी आध्यात्मिक स्थिति बहुत ऊँची है। लेकिन यदि इसमें कुछ भी मेरा योगदान होता तो फिर शायद इसको भी गुप्त रखने के लिये सोचता। लेकिन इसमें सब कुछ मेरे गुरूजी का ही जलवा था। इसलिये इसे कह देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। उदाहरण के लिये

1. जो कुछ भी हुआ वह 15 दिन के अन्दर ही हुआ जबकि गुरूजी मेरे अन्दर अपने को समायोजित किये हुए थे।
2. करीब 10 या 11 बजे परगना अधिकारी महोदय कटा हुआ पेड़ देखने गये थे। सड़क के पास ही कटा हुआ पेड़ सबको तो दिखा परन्तु उन्हें नहीं दिखा। जाहिर है कि हमारे गुरू महाराज ने ही कुछ किया होगा जिससे परगना अधिकारी महोदय वह कटा हुआ पेड़ नहीं देख सके।
3. उन्हीं 15 दिनों में मुझे स्पष्ट दिखता था कि कौन व्यक्ति कैसा है।

एक व्यक्ति के कमरे में आने पर अन्दर से यह इच्छा होती थी कि कब चला जाय परन्तु 15 दिन के बाद जब वही व्यक्ति मेरे पास आकर बैठता था तो मुझे उसमें कोई खराबी नहीं दिखती थी।

4. पेड़ भी मुझे केवल वही 15 दिन जब महाराज अपने को मेरे अन्दर समायोजित कर लिए थे तभी तक सजीव दिखे फिर जैसा आज देख रहा हूँ वैसे ही दिखते थे।

5. उन्हीं 15 दिन के अन्दर एक दिन हमारी दुलाई और पिताजी की दुलाई कम्बल लगाते समय गल्ती से बदल गया, उनका वाला दुलाई नौकर ने हमारे पलंग पर लगा दिया और मेरा वाला उनके पलंग पर। नतीजा यह हुआ कि जब पिताजी सो रहे थे तो सो नहीं सके। उसमें इतनी बिजली भरी थी कि उनको उसे अलग करना पड़ा। उन्हें रात भर कम्बल ओढ़ कर बैठे-बैठे समय व्यतीत करना पड़ा। इलाहाबाद कैम्प में केवल दो ही शाम वाली सिंटिग मैं ले सका था। महाराज ने हमारे बहन और बहनोई को भी उस कैम्प में बुला लिया था। उनके ठहरने का अन्यत्र प्रबन्ध था। गुरूजी के आदेशानुसार मुझे भी उनके साथ ठहरना पड़ा। वे कटक के पास के रहने वाले थे जहाँ गर्मी और सर्दी एक जैसी रहती है। अत: इलाहाबाद में दिसम्बर के आखिरी सप्ताह में और वह भी गंगाजी के तट के पास एक दुलाई से जाड़ा काटना अपर्याप्त हुआ। रात भर वे बेचारे कूँ-कूँ करते रहे। दूसरे दिन महाराज ने जब मुझसे पूछा कि सब ठीक है तो मुझे कहना पड़ा कि और सब तो ठीक है लेकिन हमारे जीजाजी रात भर कुत्तों के पिल्ले की तरह कूँ-कूँ करते रहे। उन्हें जाड़ा अधिक लगा। महाराज ने कहा कि वे ऐसे स्थान से आये हैं जहाँ जाड़ा इतना नहीं पड़ता है अत: यह स्वाभाविक है कि रात में उनको सोने में तकलीफ हुई होगी। महाराज ने कहा कि 'अच्छा मेरा कम्बल ले जाओ उनके दुलाई के ऊपर ओढ़ा देना। दो ही रात तो हैं मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है।' सच तो यह है कि महाराज सोते ही नहीं थे। शिष्यों के पत्रों का उत्तर देने के पश्चात वे कमरा बन्द

करके कहीं अन्यत्र लोकों में चले जाते थे। इधर जब रात हुई और मैंने महाराज का कम्बल अपने जीजाजी की दुलाई के ऊपर ओढ़ा दिया तो क्षण भर बाद हमारे बहनोई साहब की आवाज आयी क्या महाराज इलेक्ट्रिक वायर वाले कम्बल का प्रयोग करते हैं। इसमें तो इस कदर बिजली भरी हुई है कि इसे साट देने पर मेरे लिये सोना और भी कठिन है। इसे हटाकर अन्यत्र रख दो। सुबह उन्हें दे देना। मैं दो रात काट लूँगा। इस तरह से वह कम्बल मुझे हटाना पड़ा। और दूसरे दिन सुबह जब महाराज के पास उनका कम्बल ले गये तो उन्होंने पूछा कि दोनों रात समाप्त होने के बाद ले आते अभी क्यों ले आये? जब मैंने बताया कि आने का कारण क्या था तो वे मौन हो गये और इतना ही कहा कि अच्छा फिर रख दो। यही हालत पिताजी की हुई। 15 दिन चूँकि वे अपने को हमारे अन्दर समायोजित किये हुये थे हमारी दुलाई भी पूरी तरह से विद्युत से युक्त हो गयी थी। जिसे हमारे पिताजी बर्दास्त नहीं कर सके थे। और उसे उन्हें हटाना पड़ा।

नोट:- टाइफस ज्वर और खसरा (Measles) में जो अन्तर है वह यहाँ बतला देना चाहता हूँ। क्योंकि मुझे लगता है कि खसरा के गफलत में बहुत लोग टाइफस से मर जाते हैं और किसी को पता नहीं चलता है। खसरा में आप जानते हैं कि सारे बदन में Rashes निकल आते हैं और टाइफस में भी Rashes निकलते हैं।

अन्तर इतना ही है कि जहाँ खसरा में सारे बदन के साथ साथ मुँह में भी Rashes रहते हैं वहाँ **टाइफस (Typhus)** ज्वर में सारे बदन में तो Rashes होंगे, लेकिन मुँह बिल्कुल साफ रहेगा। ऐसे स्थिति में बिना समय खोये हुए तत्काल **Typhus (टाइफस)** का एक Injection लगवा देना चाहिये। कभी कभी डाक्टर भी गफलत में यह नहीं ध्यान कर पाते कि मुँह पर Rashes नहीं है तो टाइफस है। तत्काल Injection लग जाने से, यह बीमारी एक Injection से भी ठीक हो जाती है। अन्यथा 24 घण्टे में ही मरीज़ की मौत हो जाती है।

अब जहाँ टाइफस की बीमारी के लिये Injection बतलाया है वहाँ आप सब की जानकारी के लिये चेचक की भी दवा बतला रहा हूँ।

जब किसी मरीज को Measles, Chicken Pox या Small Pox हो गया हो तो पहले ही दिन से उसे भाड़ में भुना हुआ थोड़ा सा चना खिला दें फिर एक छोटा सा टुकड़ा गुड़ भी खिला दें। चाहे जो भी चेचक होगा न तो मरीज की शक्ल खराब होगी न बीमारी का दौर बढ़ेगा। सुबह शाम इसे खिलाते रहने पर मर्ज स्वत: शान्त हो जायेगा।

यदि गले में भी दाने पड़ गये हों जिस के नाते मरीज चबा कर खाने में असमर्थ हो तो चने को पीस कर थोड़े से ठंडे पानी में उसका घोल बना कर उसे पिला दें।

फिर थोड़े से ठंड़े पानी में गुड़ के टुकड़े को भी घोल कर पिला दें। सुबह शाम इसका सेवन करने पर मर्ज़ भी चला जायेगा और चेहरे की आकृति भी नहीं बदलेगी। 3 या 4 दिन जब तक मर्ज़ है खिलाते या पिलाते जाइये। एक साधू ने इसे मुझे बतलाया था जिस का प्रयोग भी मैंने गाँव वालों पर किया, जो कि बड़ा उपयोगी रहा।

स्वामी रामानन्द साधना परिवार
साधना धाम, संन्यास रोड,
कनखल-हरिद्वार (उत्तराखण्ड)